रिकार्ड - जाग सजनियाँ जाग... ओम शान्ति प्रातः क्लास 17-7-67

मीठे 2 बच्चों ने यह गीत सुना। सब सेन्टर्स पर यह गीत है वा नही यह तो पता नही है। ऐसे 2 जो दो चार अच्छे 2 गीत है वो सबके पास होने चाहिये। यह टेप मे भरने पड़े। अब यह गीत तो बनाया हुआ कलयुगी मनुष्यों का है। ड्रामा अनुसार टच किया हुआ है जो फिर बच्चो के काम आता है। ऐसे 2 गीत बच्चो को सुनने पर नशा चढ़ता है। बच्चो को तो नशा चढा ही रहना चाहिये कि अभी हम नई राजधानी स्थापन कर रहे है। रावण से ले रहे है। जैसे कोई लड़ते है तो ख्याल रहता है ना कि इनकी राजाई हप कर ले। इनका गाँव हम अपने हाथ कर ले। अब वो सब तो हद के लिये लड़ते है। तुम बच्चों की लड़ाई तो है माया से। जिसका सिवाय तुम ब्राह्मणों के और कोई को पता नही है। तुम जानते हो हमको इस विश्व पर गुप्त रीती राज्य स्थापन करना है अर्थात बाप से वर्सा लेना है। इसको वास्तव मे तो लडाई भी नही कहेंगें। ड्रामा अनुसार तुम जो सतोप्रधान से तमोप्रधान बने हो सो फिर सतोप्रधान बनना है। तुम अपने जन्मो को नही जानते थे। अभी बाप से समझाया है। और जो भी धर्म है उनको यह नालेज मिलने की है नही। बाप तुम बच्चों को ही बैठ समझाते है। या या भी जाता है धर्म ही ताकत है। भारतवासियो को यही पता नही है कि हमारा धर्म क्या है। तुमको बाप दवारा पता पडा है कि हमारा आदी सनातन देवी देवता धर्म है। बाप आकर फिर तुमको उसी घर मे ले जाते है। तुम जानते हो हमारा धर्म सुखो के कितने देने वाला है। तुमको कोई से भी लडाई आद नही करनी है। तुमको तो अपने ही स्वधर्म मे टिकना है और बाप को याद करना है। इसमे भी समय लगता है। ऐसे नही कि सिर्फ कहने से शांत हो जाते है। अन्दर यह याद रखनी है कि हम आत्मा शान्त स्वरूप हम। आत्मा अब तमोप्रधान पतित बनी हूँ। हम आत्मा जब शान्तीधाम मे थी तो पवित्र थी। फिर पार्ट बजाते 2 तमोप्रधान बनी हूँ। अभी फिर पवित्र बन कर हमको फिर वापस घर जाना है। बाप से वर्सा लेने लिये अपने को आत्मा निश्चय कर बाप को याद करना है। तुमको नशा चढेगा कि हम तो ईश्वर की सन्तान है। बाप को याद करने से ही विकर्म विनाश होते है। कितना सहज है। याद से हम पवित्र बन फिर फिर शान्तिः धाम मे चले जावेंगें। दुनियाँ इन शान्तिः धाम सुख धाम को भी नही जानती है। बिलकुल ही ईडियटस हो गये है। यह है ही आसुरी सम्प्रदाय। यह बाते किसी भी शास्त्र मे नही है। ज्ञान सागर की है ही एक गीता। जिस मे सिर्फ नाम ही बदल दिया है। सर्व का सद्गति दाता ज्ञान का सागर उस परमपिता परमात्मा को कहा जाता है। और कोई को भी ज्ञानवान कह नही सकते है। जब कि वो ज्ञान देवे तब तो तुमको ज्ञानवान बनावे। अभी सबकी है बुधी भक्तिवान। तुम भी थे। अभी फिर ज्ञान वान नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार बनते जा रहे हो। ज्ञान कोई मे है कोई मे नही है तो क्या कहेंगें? भक्ति भी छूटी और ज्ञान भी नही। अगर ज्ञान हो तो ज्ञान योग सिखावे। ना है तो क्या कहेंगें। दोनो ही जहानो से गये। उस जहान मे ऊँच पद पा नही सकेंगें। बाप सर्विस के लिये कितना उछलते उछलाते है बच्चों मे तो अभी भी तो वो ताकत नही आती है जो कि कोई को अच्छी रीती समझावे। ऐसे 2 युक्तियाँ रचे। भल बच्चे मेहनत कर कान्फ्रेंस आद कर रहे फिर भी गोपो मे कुछ ताकत है। पर्चेमैल्स मे इतनी ताकत नही है जो कि राय निकले। गोप तो फिर भी पडे लिखे पोजिशन वाले है। जिसने प्रोग्राम बनाया है जोडा ही पढा लिखा है। डबल फ्र्ट पर्स हो गया है। ऐसे 2 डबल पर्स वाला युगल कोई अपने इस ब्राह्मण कुल मे दूसरा है नही। ब्राह्मण मुठ भर है। परन्तु उनमे भी ऐसा युगल एक ही है जो कि गोपो को उठा रहे है। उनको ख्यालात रहता है कि संगठन हो जिसमे युक्तियाँ निकाले कि सर्विस वृधी को कैसे पावे। माथा मार रहे है। फिमेल्स मे दम नही है। नाम भल शक्ति सैना है परन्तु पढी लिखी हुई नही है। अगर थोडी भी पढी लिखी है भी तो झट देहअभिमान आ जाता है। बाबा ने यह भी समझाया है कि [illegible] बहुत नुकसान करती है। यह [illegible] बहुत कडी है। बहुतों को। इसलिये ही उछलते नही है। इसलिये है [illegible] पूछते भी है कि युगल के दोनों [illegible] ?

उस तरफ कितनी बडी-2 सेनाये है। स्त्रियों की भी झुण्ड है पढी लिखी हुई है। उनको मदद भी बहुत मिलती है। तुम तो गुप्त हो। कोई भी नही जानते है कि यह ब्रह्माकुमारीज क्या करती रहती है। तुम्हारे मे भी नम्बरवार है। गृहस्थ व्यवहार का बोझा सिर पर रहने से झुके हुये हो। ब्रह्मा कुमार कुमारियां तो कहलाते हो। परन्तु वो कमनलआये ठण्डी नही होती है। दोनो पहिये एक ही जैसे हो वो बहुत मुश्किल है। अब देहली मे संगठन करते है। बाबा भी समझाते रहते है फिर सर्विस को उठाने लिये बडे-2 म्यूजियमस खोलो खाई। कोई धनवान है भी तो भी उछलते नही है। धन के भूखे है। बच्चा नही होता है तो भी गोद मे ले लेते है। उछलनही आती है कि बाबा हम बैठे है मै बडा मकान लेकर देता हूं। बाबा की नजर देहली पर है क्योकि देहली है कैपिटल। बडो की बैठक को कैपिटल कहा जाता है। कैपिटल को जीता तो राजधानी ही सारी जीत लेंगें। चढाई भी कैपिटल पर ही करते है। देहली है हैड आफिस। बाबा कहते है कि देहली पर चढाई करो। बहुत अच्छा म्यूजियम बनाओ। बाबा तो स्थान आद देखते नही है। तुम बच्चे है आते जाते रहते हो। कोई अच्छे को समझाने लिये अन्दर घुसना चाहिये नां। गाया हुआ भी है कि पाण्डवो को कौरवो से तीन पैर पृथ्वी के भी नही मिलते थे। यह कौरव अक्षर तो गीता का है नां। भगवान ने आकर राजयोग सिखाया फिर उसका नाम गीता रखा है। परन्तु गीता के भगवान का नाम झूठा रख दिया है उसी लिये बाबा बार-2 कहते रहते है। मुख्य इसी पुआईन्ट को उठाना है। आगे बाबा कहते थे कि बनारस की विदवत मण्डली मे घुसो। वहां भी जीत पा नही सके। बाबा युक्तियां तो बहुत बताते रहते है। फिर अच्छी रीती कोशिश करनी है। पहले-2 तो कैपीटल मे अच्छा फर्स्ट क्लास सैन्टर हो। जयपुर मे मकान मिल गया तो सजा लिया है। परन्तु वह तो किनारा है। होना चाहिये देहली में। भल देहली के ब्राह्मण कुल भूषणो मे इतने धनवान नही है और तरफ तो है नां। बाप ~~बार-2~~ बार-2 समझाते रहते है कि ऐसे-2 बच्चे भी बाबा के हाथमे है नम्बवन देहली मे ही युक्ति रचो। संगठन मे भी मूल बात यही है कि बडा सैन्टर देहली मे कैसे खोले ? वो लोग तो देहली मे बहुत ही भूख हडताल आद करते है। तुम तो ऐसा कोई नही करते हो। लडना आद कुछ भी नही करते हो। तुम तो सिर्फ सोये हुये को जगाते हो। देहली वालो को ही मेहनत करनी है कोई और प्लाट लेल लो। तुम जो जानते हो हम ब्रह्माण्डके भी मालिक सो फिर कल्प पहले की तरह सृष्टी के भी मालिक बनेंगे। यह पक्का है कि जरूर विश्व का मालिक बनना ही है। अब तुमको तीन पैर पृथ्वी के भी कैपिटल मे भी चाहिये। जो कि वहां पर ज्ञान के बडे-2 गोले और तोपे छोडो। नशा चाहिये नां। परन्तु ऐसी तो कोशिश ही नही करते है। नशा आता नही है। माया ऐसी है जो एक दो मे ही प्यार मे नही आते है। एक कही अच्छा पढालिखा है। और है भी पढे लिखे धनवान तो फिर दम नही है। झुके हुये है। धन के मोह मे बच्चो के मोह मैं। थोडे-2 पढा है सो भी नौकरी आद मे ही फसे रहते है। बडो का आवाज चाहिये नां। इस समय भारत सारा ही गरीब है। गरीबो की सेवा करने लिये ही बाप आते है। देहली मे तो भल लाख डेढ का खर्चा होना चाहिये। बहुत अच्छा सैन्टा होना चाहिये। बच्चे बहुत ही गुप्त है जो कहते है कि मै देने लिये ~~केन्यम~~ तैयार हूं। फिर बाबा लेकर क्या करेंगें। बाबा ईशारा देते रहते है। देहली वाले समझते ही है कि बाबाध्यान खिचंवाते है। आपस मे क्षीर खण्ड होकर मिल कर अच्छे-2 वकील आदो को हाथ मे करो। वो जमीन नही तो दूसरी जमीन हाथ करो। अपने पाण्डवो का किला तो बनावे ही नां। देहली मे ही बनाना होगा। परन्तु बच्चे इतनी दूरादंश बुधी नही रखते है। इसमे तो दिमाग बहुत अच्छा चाहिये। बहुत तो कुछ कर भी सकते है परन्तु दिमाग ठण्डा है। वो लोग आते तो बहुत है कि भारत हमारा देश है। हम ऐसे-2 करेंगें परन्तु खुद मे दम कुछ भी नही है। बिना मदद के उठ नही सकते है। तुमको तो बहुत मदद मिल रही है बेहद के बाप से। इतनी मदद कोई दे नही सकते है। [illegible] है।

मेल ठीक है वा नही। जहाँ मेल नही तो वहाँ पर हार है। तुम बच्चो को बाप विश्व की बादशाही देते है तो हौसला बहुत चाहिये। निन्दा चुगली मे ही बहुतो की बुधी अटकी रहती है। बधनो की आफत है माताओ पर। मेल्स पर तो कोई बधन नही है। माताओं को ही अबला कहा जाता है। पुरुष बलवान होते है। पुरुष शादी करते है तो उनको बल दिया जाता है। तुम्ही गुरु ईश्वर सब कुछ हो। स्त्री तो जैसे कि पूँछ है पिछाडी मे लटकने वाली। तो सच्चमुच पूँछ होकर ही लटक मरती है। पति मे मोह बच्चो मे मोह। जैसे हुँ-बहू बन्दरो मे होता है नां। पुरुषों का इतना मोह नही रहता है। उनकी तो एक जुती गई तो फिर दुसरी ततीसरी ले लेते है। आदत ही पड गई है। अबतो देखो शंकराचार्य जैसे भी कहते है कि बहुत शादियाँ करके बहुत बच्चे पैदा करने चाहिये। बकबकते रहते है। आवाज तो कोई करते ही नही है। ब्रहमा कुमारी कुमारियों मे भी ताकत नही है जो कि उनको लिखे कि तुम सन्यासी होकर यह क्या कह रहे हो। सब जैसे कि सोये हुये है। ताकत ही नही है। कोई-2 अखबार वाले मानते भी है तो उनके पास जाते नही है। बाबा तो समझाते रहते है कि एक-2 अखबार मे डालो। गीता बिलकुलखण्डन की हुई है। इस कारण है भारत गरीब बना है। फिर बाप आकर सच्ची गीता सुना कर राजयोग सिखा कर भारत को फिर से राजयोग सिखा रहे है। बाबा कहते है बहुत परन्तु उत्तरही नह नही आता है कि बाबा हम यह युक्ति रच रहे है। दिल पसन्द कोई समाचार नही आता है। बाबा तो कोई से बात नही करेंगे। क्योंकि उनमे तो शिव बाबा की पधरामणी है। कोई उल्टा सुल्टा बोल कर डिस रिगार्ड कर दे क्यो कि वो लोग तो अपने ही नशे मे रहते है नां। उनको क्या पता कि यह कौन है। इनकी बाहर मे सर्विस हो नही सकती है। इसलियेही बाबा ने कहीं पर जाना ही बन्द कर दिया है। बच्चो को बाप का शो करना है। यही समझाना तुम्हारा काम है। बाप के साथ यह पूछ भी तो लटकी हुई है। तो यह भी जा नही सकते है। कहेंगे शिव बाबा यह बताओ। यह-2 हमारे पर आफत है। इसमे आप राय दो। ऐसे-2 बाते पूछते है। बाबा तो आये ही है पतितो को पावन बनाने। बाप कहते है तुम बच्चो को सब नालेज मिलती है। कोशिश कर आपस मे मिल कर बडा सेन्टर खोलो। चिउंटी मार्ग की सर्विस तो चल ही रही है। अब विहंग मार्ग का तमाशा दिखाओ तो बहुतो का कल्याण हो। बाबा ने कल्प पहले भी समझाया था सो ही अब भी समझाते है। बहुतो की बुधी कहाँ नां कहाँ पर फँसी पडी है। उमंग नही है। बहुतो का आपस मे प्यार बहुत कम है। झट देहअभिमान मे आ जाते है। देहअभिमान तो बहुत खोटा है। उसने ही सत्यानाश की है। अब बाप सत्या उंची करने कितनी सहज बात बताते है। बाप को याद करो तो शक्ति आवे। नही तो शक्ति आती नही है। भल सेन्टर्स सम्भालते है परन्तु नशा नही चढता है। क्योंकि कुछ देह अभिमान है। देहीअभिमानी बने तो नशा भी चढे। हम किस बाप के बच्चे है। बाप कहते है कि जितना-2 तुम देहीअभिमानी होगें उतना ही बाप का बल आवेगा। आधा कल्प का देहअभिमान का नशा है। ऐसे नही कि बाबा ज्ञान का सागर है। हमने भी ज्ञान उठाया है बहुतो को समझाते भी है। परन्तु याद का जौहर भी चाहिये नां। ज्ञान की तलवार है। याद की फिर यात्रा है। दोनो ही अलग-2 चीज है। ज्ञान मे याद की यात्रा का जवहर चाहिये। वो नही है तो जैसे कि काठ की तलवार हो जाती है। सिख लोग तलवार का कितना मान रखते है। वो तो हिंसक थे। जिससे ही लडाई की। वास्तव मे कायदे सिर उनको गुरु तो कह नही सकते है। गुरु लोग लडाई थोडेई करते है। गुरु तो अहिंसक चाहिये नां। लडाई से थोडेई सदगति होती है। दुनियां मे क्या-2 होता रहता है। विलायत से भी तलवार मगंवा कर परिक्रमा देते रहते है। जलसा मनाते है। तुम्हारी तो याद योग की बात है। याद के बल बिना तलवार काम मे नही आवेगी। क्रमनलआये कब सुधरेगी नहीं। यह बहुत नुकसान करने वाली है। मूल बात है यादकी। लिखते है कि बाबा बहुत मेहनत है। बाबा कहते है कि पुरुषार्थ करते रहो। तो तलवार मे भी जवहर आवे। अन्दर मे धारना करनी है। आत्मा कानो से सुनती

सुनती है नां। बाप कहते है कि तुम याद में मस्त रहोतो सर्विस करते जावेंगें। कब-2 कहते है बाबा सुनते नही है। बाबा कहते है याद की यात्रा मे कच्चे हो। इसलिये ही ज्ञान तलवार काम नही करती है। याद की मेहनत करो। यह है गुप्त मेहनत। मुरली चलाना तो प्रतयक्ष है। याद की ही गुप्त मेहनत है। जिससे ही शक्ति मिलती है। ज्ञान से शक्ति नही मिलती है। तुम पतित से पावन याद के बल से बनते हो। कमाई का पुरुषार्थ करना है। कहते है कब-2 बहुत खुशी रहती है कब पता नही क्या होता है। याद मे नही रहने कारण ही एकरस अवस्था नही रहती है। फिर किसम-2 के घुटके आते है। स्टुडन्टस को टीचर याद नही पड़ता होगा? यहां तो घर मे रहते हुये भी सब कुछ करते हुये टीचर को याद करना है। इस टीचर से तो बहुत-2 ऊंच पद मिलता है। गृहस्थ व्यवहार मे भी रहना है। टीचर की याद रहे तो भी बाप और गुरु याद जरुर आवेंगें। कितने प्रकारो से समझाते रहते है। परन्तु घर मे भी धन दौलत बाल बच्चे आद को देख कर भूल जाते है। समझाते तो बहुत है। तुमको रुहानी सर्विस करनी है। बाप की याद ही ऊंच ते ऊंच सेवा। मनसा वाचा कर्मणा। बुधी मे याद बाप की। मुख से भी ज्ञान की ही बाते सुनाओ। किसीको भी दुःख नही देना है। कोई अकर्तव्य नही करना है। पहली बात अल्फ नही समझने से और कुछ भी नही समझेंगें। पहले-2 अल्फ पक्का करवाना चाहिये तब तक आगे नही बढ़ना चाहिये। सबसे ही वण्डरफुल बात है गीता की ही बात को सिध करना। शिव बाबा राज योग सिखा कर विश्व का मालिक बनाते है। झूठी गीता सुनने कारण कंगाल बन गये है। इस छी-2 दुनियां मैं माया का शौ बहुत है। कितना फैशन हो गया है। छी-2 दुनियां से तो नफरत आनी चाहिये। एक बाप को याद करने से तुम्हारे विकर्म विनाश होगें और पवित्र बन जावेंगें। टाईम वेस्ट नही करो। अछी रीती धारना करो। माया दुश्मन बहुत चट कर देती है। कमाण्डर गफलत करते है तो उनको डिसमिस भी कर देते है। खुद कमाण्डर को भी लज्जा आ जाती है। फिर रजाईन भी कर लेते है। यहां पर भी ऐसे ही होता है। अछे-2 कमाण्डर्स कब फंस हो जाते है। ओम

रही हुई पुआईन्टः-ः-धर्मों मे मुख्य पहले-2 देवी धर्म है। फिर सबकी वृधी होती है झाड बढ़ता है। अनेक अनेक धर्म अनेक मत हो जाते है। यही एक धर्म श्रीमत से स्थापन होता है। दवैत की बात नही। यह रुहानी नालेज रुहानी बाप ही बैठ सुनाते है। तुम तो पैक्टीकली अनुभव कर रहे हो। जानते हो कि बाप हमको पढ़ाते है। ऊंच मे ऊंच पद जिससे पाते है। हमको तो बहुत इनकम होती है। यही शुध अंहकार रखना है कि हमको तो भगवान पढ़ाते है। और फिर बाकी तो क्या ही चाहिये। जब कि हम विश्व का मालिक बनते है तो खुशी क्यो नही रहती है? या तो निश्चय मे कहां पर संशय है। बाप मे संशय कहीं पर भी लाना नही चाहिये। माया संशय मे लाकर भुला देती है। बाबा ने समझाया कि आंखे बहुत धोखा देने वाली है। अछी चीज होगी तो दिल बित-बित करेंगें कि खावें। आंखो से है देखते है तो क्रोध भी आता है मारने लिये। देखेंगें ही नही तो मारेंगें कैसे। आंखे उसे है देखते है तभी लोभ मोह भी आता है। मुख्य धोखा देने वाली तो आंखे ही है। इन पर पूरी नजर रखनी चाहिये। आत्मा को ज्ञान मिलता है तो फिर क्रिमनलपना छूट जाता है। ऐसे भी नही कि आंखो को निकाल ही देना है। हो सकता है कि ऐसे भी कोई मस्त हो जावे। तुम्हारी एक बात मे विजय हो तो फिर विहंग मार्ग की सर्विस हो जावेगी। अखबारों मे भी तुम डाल सकते हो कि गीता खण्डन होने कारण ही भारत की इतनी बुरी हालत हो गई है। लेकिन तुम नई दुनियां मे जा रहे हो तो तुमको कितनी खुशी होनी चाहिये। ओम

डायरेक्शनः-ः-बाप के दवारा दिये गयेः-ः-देहली मे जो संगठन 12 तारीख से 15 अगस्त तक हो रहा है और जिनको निमन्त्रण भेजा गया है वो अगर और कोई का नाम राय देने लिये लिखेंगें वो खुद भी अपनी राय लिखेंगें कि मै अछी-2 राय दे सकता हूं। तो अपना नाम मधुबन मे बाप-दादा पास भेज सकते है। फिर बाबा संगठन मे आने लिये निमन्त्रण भेज देंगे जी। बच्चों से अब विदाई